P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# रोजगारपरक एवं बेरोजगारपरक माताओं एवं उनके बालकों (8 से 12 वर्ष) के मध्य संबंध : एक तुलनात्मक अध्ययन

**कालिन्दी**
शोध छात्रा,
गृह विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

**रूचिरा राठौर**
एसोसिएट प्रोफेसर,
गृह विज्ञान विभाग,
महिला डिग्री कालेज,
लखनऊ

**सारांश**

प्रस्तुत शोध रोजगारपरक एवं बेरोजगारपरक माताओं एवं उनके बालकों (8 से 12 वर्ष) के मध्य संबंध का एक तुलनात्मक अध्ययन है।

इस अध्ययन में 100 रोजगारपरक माता एवं 100 बेरोजगारपरक माताओं को लिया गया है। एक रोजगारपरक एवं बेरोजगारपरक माता का अपने बालकों (लड़को) से किस प्रकार का संबंध होता है अर्थात दोनो के मध्य सकारात्मक संबंध या नकारात्मक संबंध में से कौन सा अधिक प्रभावी होता है। इस तथ्य को ज्ञात करने के उद्देश्य से इस विषय का चयन किया गया है।

**मुख्य शब्द :** रोजगारपरक एवं बेरोजगारपरक माताएं।

**प्रस्तावना**

वर्तमान में आधुनिक समाज के बदलते हुए परिवेश में बढ़ती हुई आर्थिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के कारण महिलाओं को मातृत्व दायित्व के साथ–साथ गृह के बाहर अन्य महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वाहन करना पड़ रहा है। महिलायें पुरूषों कें समान स्वयं भी परिवार की आर्थिक दायित्वों की पूर्ति के लिए व्यवसायिक गति विधियों में संलग्न हो रही है। देखा जाये तो रोजगारपरक माताओं के ऊपर दोहरा कार्य दायित्व होता है। प्रथम परिवार का तथा द्वितीय व्यवसाय का, जिसके चलते रोजगारपरक मातायें समयाभाव के कारण अपने बालकों के साथ अधिक समय व्यतीत नहीं कर पाती है, जबकि बेरोजगारपरक मातायें अर्थात घर पर रहने वाली मातायें अपने बालकों के संग अधिक समय व्यतीत करती है।

बालक का परिवार में सबसे अधिक लगाव अपनी माता से होता है, क्योंकि माता ही बालक की पालनकर्ता होती है। इसलिए माता के व्यक्तित्व का प्रभाव बालक पर सबसे अधिक पड़ता है। इसका कारण हो सकता है कि जब बालक माता के गर्भ में आता है, तभी से वह अपनी माता के आचार विचार से प्रभावित होना प्रारम्भ हो जाता है। जन्म लेने के पश्चात् वह पूर्ण रुप से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए माता पर ही निर्भर रहता है। माता के द्वारा ही उसे अच्छे संस्कार, अच्छे बुरे का भेद भाव करना एवं अनुशासन सिखाया जाता है। निश्चय ही ऐसा वातावरण बालक एवं माता के सम्बन्धो को मजबूत बनाता है। परन्तु जब माता रोजगारपरक होती है तो वह बालक को अधिक समय नहीं दे पाती है। जिसके फलस्वरुप माता एवं बालक के मध्य संबंध प्रभावित होते होगें।

हिल एट; आल (2005) "बालकों की परवरिश एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है और माता–पिता बालक के सम्पूर्ण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। एक बालक में माता–पिता की देख–भाल की शैली के प्रतिबिम्बित व्यवहार, नैतिकता और आत्मविश्वास का स्तर निर्धारित होता है। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि उचित परवरिश से एक बालक अपने जीवन के अवसरो और चुनौतियों को साहस पूर्वक स्वीकार करने की क्षमता रखता है।

यह अच्छी तरह से ज्ञात तथ्य है कि लगभग सभी समाज चाहे वह पूर्वी हो या पश्चिमी सभी जगह बालकों का पालन परिवार व मुख्य रूप से माता के द्वारा होता है। इस प्रकार माता की भूमिका बालक की परवरिश में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। माता के द्वारा ही बालकों की शारीरिक सुरक्षा और पोषणात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। बालकों में प्रेरणा, नैतिकता एवं नैतिक मूल्यों का पालन करने के लिए माता ही प्रेरित करती हैं। माता बालकों की प्रथम

शिक्षिका होती है और परिवार पहली संस्था जहाँ उसके जीवन का प्रारम्भ होता है। यदि बालकों की माता गृहणी होती है तो वह बालकों की परवरिश और शिक्षा पर पूर्ण ध्यान केंद्रित कर सकती है। परन्तु यदि वह रोजगारपरक होती है और घर के बाहर कार्यरत है तो वह एक गृहणी की तरह से बालकों के पालन पोषण की जिम्मेदारी नहीं निभा सकती है। घर व बाहर की उत्तरदायित्वों को निर्वाहन करने के साथ वह बालकों की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकती है यही कारण है कि सामाजिक विचारधारा के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि रोजगारपरक माता और बालक के मध्य संबंध काफी हद तक प्रभाावित होते है। यद्यपि यह सभी मामलों में सत्य नहीं होता है लेकिन कुछ मामलों में जब माता घर से बाहर होती है तो बालक गलत संगति में पड़ सकता है।"

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व**

समाज की बदलती आवश्यकताओं ने माताओं की भूमिका को गृहणी से बदल दिया है। वर्तमान में माताएं पुरूषों से कंधे से कंधा मिला कर चल रही है और घर के बाहर के उत्तरदायित्वों को भी बखूबी निभा रही है। जिस के कारण वह अपने बालकों के लालन पालन में कम समय दे पाती है। जिस से माता बालक के मध्य संबंध प्रभावित होता है। समाज में रोजगारपरक एवं बेरोजगारपरक माताओं एवं उनके बालकों के मध्य संबंधों को ले कर बहुत सी भ्रातियाँ फैली हुई है। उत्सुक अवलोकन के बाद रोजगार एवं बेरोजगारपरक माताओं का उनके बालकों के मध्य संबंधों में भिन्नताएं पाई गई। बालक अभिभावक संबंध पर बहुत से शोध हुए है परन्तु रोजगार एवं बेरोजगारपरक माताओं के बालकों के मध्य संबंधों पर कम शोधकार्य हुए है। इस दृष्टि से महत्वपूर्ण विषय है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

रोजगारपरक एवं बेरोजगारपरक माताओं एवं उनके बालकों के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।

**साहित्यावलोकल**

माता–पिता बच्चों के व्यक्तित्व और चरित्र दोनों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। उनके आपसी सम्बन्ध और व्यवहार से बाल मन सहज ही जुड़ जाता है। माता–पिता बालक के लिए सुरक्षा और स्नेह का स्रोत होते है। उनके परस्पर मधुर संबंध जहां बच्चों के चहुंमुखी विकास में सहायक होते है। वही उनके आपसी तनावपूर्ण टूटते रिश्ते उनके विकास को न केवल अवरूद्ध कर देते है वरन् उनके जीवन को अनेक कुंठाओं विकारों से भर देते है। फलस्वरूप दमन, निराशा और पराजय जैसे भाव उनमें पनपने लगते है। इस सम्बन्ध में डॉसोब और अश्मन, (2000) ने कहा है कि "बालकों के भावात्मक विकास में बाल्यावस्था के बालक अभिभावक सम्बन्ध का बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।"

इसी संबंध में लर्नर केस्टललिओ (2002) के अनुसार "बाल्यावस्था में बालक.माता के अच्छे सम्बन्ध से बालक को भविष्य में अपनी समस्याओं को हल करने की क्षमता आती है।"

इसी संबंध में रोगोफ (2003) के अनुसार "बाल्यावस्था में बालक, माता के अच्छे सम्बन्ध से बालक समस्याओं को हल करने की क्षमता के कारण वह किसी भी पर्यावरण में खुद को समायोजित कर सकता है।"

इसी संबंध में हीथर रूदौ (2011) "कम आय वाली रोजगारपरक माता और बालक के संबंधो पर शुरूवाती दौर में कोई प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु वक्त बीतने के साथ माता–बालक के संबंधो में बदलाव आ जाता है, जिसका प्रभाव बालक के आगामी जीवन में व्यवहारात्मक समस्या के रूप में दिखाई देता है।"

एक माता चाहे वह रोजगारपरक हो या बेरोजगारपरक हो उसका स्वभाव उन दोनो अर्थात बालक और माता के मध्य के संबंध को काफी हद तक प्रभावित करता है। इस संबंध में हीथर रूदौ (2011) के द्वारा यह परिणाम पाया गया है कि "यदि माता का स्वभाव सख्त होता है तो बालक माता के बीच बहुत कम संवाद होता है। यह दूरी आगे चल कर माता–बालक के बीच झगड़े का रूप लेती है और किशोरावस्था तक बालक बाल अपराध में भी संलग्न हो जाता है।"

जिन माता बालक के मध्य सुरक्षा की भावना होती है। उन के बालक अपने जीवन में अपराधिक घटनाएं कम करते है। इस संबंध में काट स्टोन लोम्बारडी (2012) के अनुसार "जब जिन बालकों का अपनी माता से सुरक्षित लगाव नहीं होता है। जिस से उनके आगामी जीवन में व्यवहारात्मक समस्याएं आ सकती है। शोध बताते है कि जिन बालकों का शिशुवस्था में अपनी माता से सुरक्षित बंधन नहीं था। उनके आगामी जीवन में, वह द्वेषभाव, आक्रामकता और विनाशकारी व्यक्तित्व के होने की सम्भावना अधिक पाई गई। जबकि जिन बालकों का अपनी माता से अच्छे बंधन थे उन बालकों के मन में आगामी जीवन में अपराधिक विचार नहीं पाये गये।" माता और बालक का मजबूत संबंध बालक के शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस संबंध में काट स्टोन लोम्बारडी (2012) के अनुसार "जिन बालकों का अपनी माता से अधिक जुड़ाव होता है। उनका स्कूल में प्रदर्शन अच्छा होता है। वे माताएं प्रायः बालकों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने एवं दूसरो की भावनाओं को समझने की शिक्षा देती है। उनके बालक केवल स्पष्टवादी ही नहीं बल्कि, लिखने पढ़ने में भी चतुर होते है। लेकिन उनका सबसे अच्छा प्रदर्शन कक्षा में खुद पर नियन्त्रण होता है।"

एक माता तथा बालक के मध्य का अच्छा संबंध बालक को मानसिक रूप से स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रखने में सहायता करता है। इस संबंध में काट स्टोन लोम्बारडी (2012) के अनुसार "बालकों के मानसिक स्वस्थ की दृष्टि से माता–बालक के संबंधो में करीबी होना अच्छा होता है। अमेरिकन सायकोलिाजिकल एसोसियशन के शोध के द्वारा यह पता चला है कि माता–बालक के अच्छे संबंध होने से बालक, कोई बॉडी बिलिडिंग के समान नहीं खरीदता। वो मानते है कि पुरूष को हमेशा लड़ना नहीं चाहिए बात करके झगड़े को निपटाया जा सकता है। ये बालक भावनात्मक रूप से खुले विचारो के होते है। ये अच्छी

दोस्ती निभाते है तथा इनमें अवसाद की भावना कम होती है।"

कल्पनाम (2018) के अनुसार बाल्यावस्था में यदि माता बालक का स्वस्थ संबंध होता है तो बालक भावनात्मक रूप से मजबूत होता है। तथा उसके जीवन में व्यवहारत्मक समस्याएं कम आती है। माता–बालक का मजबूत संबंध बालक में सुरक्षा और आत्मविश्वास लाता है।

**शोध विधि**

**अध्ययन सेटिंग**

'यह अध्ययन लखनऊ शहर के प्राईवेट स्कूल में अध्ययन करने वाले बालकों की रोजगार एवं बेरोजगारपरक माताओं के लिए हैं।

**अध्ययन रूपरेखा**

उद्देश्य पूर्ण अध्ययन।

**न्यार्दश संख्या**

उद्देश्य पूर्ण न्यार्दश को पूर्ण करने हेतु लखनऊ शहर के प्राईवेट स्कूलों में अध्ययनरत बालकों की रोजगारपरक एवं बेरोजगारपरक माताएं हैं। (8 से 12 वर्ष के बालकों का रोजगारपरक एवं बेरोजगारपरक माता के मध्य संबंध का तुलनात्मक अध्ययन) के लिए 200 न्यादर्श लिया गया। 100 रोजगारपरक माताएं एवं 100 बेरोजगारपरक माताएं।

**आंकड़ा विश्लेषण**

**आंकड़ों के संकलन हेतु उपकरण – बालक–अभिभावक सम्बन्ध प्रश्नावली उपकरण**

डा0 एन0 एस0 चौहान और डा0 हरिश्चंद्र शर्मा ने 1971 में विकसित किया है। इसमें बालक–अभिभावक सम्बन्ध से सम्बन्धित 8 आयम दिये गये है।

**शोध प्रविधि**

उद्देश्य पूर्ण न्यार्दश को पूर्ण करने हेतु रोजगारपरक एवं बेरोजगारपरक माताओं से बालक अभिभावक संबंध प्रश्नावली को साक्षात्कार विधि के द्वारा एवं व्यक्तिगत अवलोकन के द्वारा पूर्ण किया ।

**आंकड़ा विश्लेषण प्रक्रिया हेतु सांख्यिकीय प्रविधियां**

सांख्यिकीय प्रविधियां वर्तमान शोध में एकत्र प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी मान एवं सह संबन्ध सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों को एकत्र करने तथा उन्हें सारणीबद्ध करने के पश्चात् उपर्युक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग परिणाम प्राप्त करने हेतु किया गया।

**सारणी संख्या–1**

**रोजगारपरक और बेरोजगारपरक माताओं एवं उनके बालकों के मध्य संबंधों का अध्ययन**

| समूह | संख्या | माध्य | मानक विचलन | मध्यमानों का अन्तर | मानक त्रुटि | क्रान्तिक अनुपात | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रोजगारपरक माताओं के बालक | 100 | 65.53 | 11.6015 | 6.79 | 1.59 | 4.2704 | .05 सार्थकता स्तर पर अन्तर सार्थक |
| बेरोजगारपरक माताओं के बालक | 100 | 58.74 | 10.8485 | | | | |

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि रोजगारपरक माताओं के बालकों के मध्य संबंध के अध्ययन के परिणाम स्वरुप प्रदत्तों के प्राप्ताकों का मध्यमान 65.53 तथा मानक विचलन 11.6015 है। बेरोजगारपरक माताओं के बालकों के मध्य संबंध के प्राप्ताकों का मध्यमान 58.74 तथा मानक विचलन 10.8485 है। दोनों प्राप्तांकों के मध्यमानों का अन्तर 6.79 है। इस अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण का उपयोग किया गया जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात 4.2704 प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.96 से कम है। अतः शोध से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना .05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि रोजगारपरक और बेरोजगारपरक माताओं के बालकों के मध्य संबंधों में अन्तर पाया गया अर्थात रोजगारपरक माताओं के बालकों के मध्य संबंध अच्छा पाया गया क्योंकि वे अधिकतर बाहर होने के कारण बाकी का समय वे अपने बालकों को अधिक प्यार दुलार, उचित निगरानी, सुख सुविधाएं, यर्थाथवादी, आदर्शवादी, अनुशासन, अच्छा व्यवहार एवं खुद का वैवाहिक जीवन समायोजित कर के रहती हैं। जिस से बालक माता की आपसी समझ बेहतर पाई गई। जब कि बेरोजगारपरक बालकों की माता पूरे दिन घर पर रहने के कारण बोर हो जाती हैं इसलिए शायद बेरोजगारपरक माता चिड़चिड़ी हो जाती हैं जिस के कारण वह बालक के प्रति थोड़ा लपरवाह, अधिक डॉटना, अधिक स्वतंत्रता देना, तथा खुद का वैवाहिक जीवन असंतोष भरा हो जाता हैं। अतः इस कारण भी माता एवं बालक के सम्बन्धों या आपसी समझ में नकारात्मक परिणाम पाया गया।

**निष्कर्ष**

**बालक– माता का सम्बन्ध**

बालक और रोजगार एवं बेरोजगारपरक माता के सम्बन्धों का अध्ययन करने के पर जो निष्कर्ष पाया गया हैं। उसको सांख्यिकीय आंकड़ो में देखा जा सकता हैं जिस में दो समूहो अर्थात रोजगार एवं बेरोजगारपरक माता के मध्य के सम्बन्धों का परिणाम प्रदर्शित किया गया हैं। सारणी में बेरोजगारपरक माता और उन के बालकों के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन के फलस्वरुप माध्य का प्राप्तांक निम्न पाया गया हैं जबकि रोजगारपरक माता और उन के बालक के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन के फलस्वरुप माध्य का प्राप्तांक उच्च पाया गया। इस प्राप्तांक से यह परिणाम निकलता हैं कि रोजगारपरक माता का अपने बालकों से सम्बन्ध उत्तम पाये गये। अतः यह कहा जा सकता है कि रोजगारपरक माता अधिकतर बाहर होने के कारण जब वह घर पर होती है तो वे अपने बालकों को अधिक प्यार दुलार, उचित निगरानी, सुख सुविधाएं, यर्थाथवादी, आदर्शवादी, अनुशासन, अच्छा व्यवहार एवं खुद का वैवाहिक जीवन समायोजित कर के रहती हैं। जिस से बालक माता की आपसी समझ बेहतर पाई गई। जब कि बेरोजगारपरक बालकों की माता पूरे दिन घर पर रहने के कारण बोर हो जाती हैं इसलिए शायद बेरोजगारपरक

माता चिड़चिड़ी हो जाती हैं जिस के कारण वह बालकों के प्रति थोड़ा लपरवाह, अधिक डॉटना, अधिक स्वतंत्रता देना, तथा खुद का वैवाहिक जीवन असंतोष भरा हो जाता हैं। अतः इस कारण भी माता एंव बालक के सम्बन्धों या आपसी समझ में नकारात्मक परिणाम पाया गया।

बदलते वक्त में, समाज में महिलाओं की भूमिका भी बदल गई है। आज महिलाएं अर्थात माताएं मातृत्व दायित्व के साथ–साथ गृह के बाहर भी अन्य महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वाहन कर रही है, तथा परिवार को आर्थिक सहयोग के लिए रोजगार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

एक बालक की परवरिश में माता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जन्म लेने के बाद बालक पूर्ण रूप से अपनी माता पर निर्भर होता है। माता के द्वारा उसकी विभिन्न शारीरिक मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। बालक जैसे – जैसे बड़ा होता जाता है उसका अपनी माता से लगाव बढ़ता जाता है। बालक की आयु जब 8 से 12 के बीच की होती है, तो उसे अधिक देख–भाल एवं उचित मार्गदर्शन की अत्याधिक आवश्यकता होती है। क्योंकि इस आयु में जिज्ञासाओं का तुफान बालकों के मन में अपना घर बना लेता है।

यदि एक माता रोजगारपरक होती है तो उसके पास समय का अभाव होता है। जिसके कारण वह एक बेरोजगारपरक माता अर्थात घर पर रहने वाली माता की तरह अपने बालकों की परवरिश नहीं कर सकती है। माताओं का बालकों को पर्याप्त समय न दे पाना बालक–माता के संबंधों को प्रभावित कर सकते है। एक बेरोजगारपरक माता के द्वारा बालकों को पर्याप्त समय देने के कारण बालक–माता संबंध भी प्रभावित होगे। इन दोनो तथ्यों के परिणामों को जानने के लिए बालक–अभिभावक संबंध–प्रश्नावली का प्रयोग कर के रोजगार एवं बेरोजगारपरक माताओं से साक्षात्कार विधि एवं व्यक्तिगत अवलोकन के द्वारा परिक्षण किया गया।

बालक–अभिभावक संबंध के 8 आयामों नकारात्मक एवं सकारात्मक दो पक्ष दिये गये है। जिसमें नफरत सह प्यार, लापरवाह सह निगरानी, उपेक्षा सह विलासता, आदर्शवाद सह यर्थाथवादी, अनैतिकता सह आदर्शवादी, स्वतंत्रता सह अनुशासन, वैवाहिक असंतोष सह वैवाहिक समायोजन एवं बुरा व्यवहार सह अच्छा व्यवहार। रोजगार एवं बेरोजगारपरक माताओं का उनके बालकों के मध्य संबंधों का अध्ययन के परिणाम स्वरूप अन्तर पाया गया।

1. रोजगारपरक माताओं का अपने बालकों से संबंधो में सकारात्मक पक्ष और नकारात्मक पक्ष में अन्तर पाया गया।
2. रोजगारपरक माताओं का अपने बालकों से संबंधों में सकारात्मक पक्ष अधिक प्रभावी है।
3. बेरोजगारपरक माताओं का अपने बालकों के मध्य संबंध में बालक–अभिभावक प्रश्नावली के 8 आयामों के नकारात्मक पक्ष अधिक प्रभावी है।

रोजगारपरक माताओं पर दोहरी जिम्मेदारी होने के कारण वे अपने बालकों के व्यक्तित्व विकास के प्रति अधिक चितिंत होती है। इसलिए वे अपने बालकों के उचित व्यक्तित्व विकास के लिए वे बालकों को अधिक प्रेम, उचित निगरानी,सुख सुविधाएं, यर्थावादी विचारधारा, आदर्शवादी व्यक्तित्व, अच्छा व्यवहार एवं खुद का वैवाहिक जीवन समायोजित कर के रहती है। बेरोजगारपरक माताएं घर पर रहते हुए बालकों की परवारिश में पूरा समय लगाती है। अधिकतर समय घर में रहने के कारण बेरोजगारपरक माताएं बोर हो जाती जिसके परिणाम स्वरूप उनका अपने बालकों के संबंधों में (बालक – अभिभावक प्रश्नावली) के अनुसार नकारात्मक पक्ष अधिक प्रभावी है। अर्थात बेरोजगारपरक माताएं अपने बालकों के प्रति थोड़ा लापरवाह, अधिक, डॉटना, अधिक स्वतंत्रता देना, खुद का वैवाहिक जीवन असंतोष भरा हो जाता है।

**शैक्षिक महत्व**

1. रोजगारपरक माताओं का अपने बालकों से स्वस्थ सम्बन्ध होता है।
2. रोजगारपरक माता बालकों से दिन भर दूर रहने के कारण अधिक प्रेम करती है, जिससे बालक स्वस्थ मानसिक विचारधारा का होता है।
3. बेरोजगारपरक माताओं को अपने तनाव के प्रभाव को बालक माता सम्बन्धों पर नहीं पड़ने देना चाहिए।

**सुझाव**

इस शोध से संबंधित कुछ और शोध किये जा सकते है जो निम्नलिखित है–

1. रोजगारपरक माताओं के रोजगार के स्तर का उनके बालकों के शैक्षिक स्तर से संबंध।
2. रोजगार एवं बेरोजगारपरक माताओं का बालिकाओं से संबंध।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. *दालचीनी, आर, और,अमीर,वाई (2002), काम और परिवार की भूमिका निभाने के महत्व में लिगं भेदरू काम.परिवार के संघर्ष के लिए निहितार्थ सेक्स भूमिकाओं 47,531.541 / /*
2. *प्रो. कमलेश शर्मा (2000), एडवान्स बाल विकास स्टार पब्लिकेशन्स, आगरा /*
3. *Dawson & Ashman (2000) The role of early experience in shaping behavioral and brain development and its implication for social policy. Dev psychopathol 2000 Autumn;12(4):695-712*
4. *Heather Rudow (2011)- A positive mother-son relationship has a positive impact in teen years. A publication of the American counseling association.*
5. *Hill,et al;(2005)-Consensual qualitative research; Journal of counseling psychology,p. 52,196-205.doi:10.1037/0022-0167-522*
6. *Rogoof (2003)- Play and learning in eariy childhood setting. P.54-57*
7. *Lerner & Castellion (2002)- Parental Incarceration and the family: psychological and social effects of imprisonment on children, parents, and caregivers. P.9-13,123,142,164,167*
8. *Kata stone Lombardi (2012)- Positive parent–child relationship. www.the mom's myth: telegram. Com/article/20120509/.*
9. *Kalpanam (2018)- Mother-son relationship; why it is important and How it evalves over years.*

*www.momjunction.com/articals/mothero-son relationship-00428471/#gref.*

**Articles**

10. *कामकाजी मम्मियो के बच्चे हैं...- Boldsky Hindi https://hindi.boldsky.com› pregnancy-parenting/kids/2011/working-mother-effect-on-children-aid0204.html*
11. *आश्चर्य ! मां कामकाजी है तो बेहतर है-Familife हिन्दी https://familife.in/hi/1217-*
12. *कामकाजी माताओं के बच्चे।- Parenting Nation www.parentingnation.in/Hindi/.../children-of-working-mothers_121?...comment...*
13. *दोहरा बोझ झेल रही हैं कामकाजी महिलाएं। दुनिया..... www.dw.com/hi/a-19100443*
14. *कामकाजी महिलाओं के बच्चे अस्वस्थ होते हैं: रिपोट.... https://www.livehindustan.com/news/article/article1-story-199396.html*